!! श्री हरि !!

आवसविहारी संस्कृतमहाविद्यालयः रहीमपुरः, खगड़िया
अङ्गीभूतः कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयः
दरभङ्गा

शास्त्री प्रथम खण्ड: विषयः-
साहित्यम अनिवार्य प्रथम पत्रम
अनिवार्य - व्याकरणम, भाग-१४

लघुसिद्धान्तकौमुदी

[अथ अच् सन्धि प्रकरणम]

वृद्धिरादैच् - १।१।१।।

आदैच्च वृद्धिसंज्ञः स्यात्।

प्रस्तुतमिदं सूत्रं पाणिनिरष्टाध्यायीत्यस्य प्रथमाध्यायस्य प्रथमपादान्तर्गतं प्रथमं सूत्रमिदम। अत्र वृद्धिरिति प्रथमान्तं आदैच् इति प्रथमान्त पदम। द्विपदात्मकम- इदं सूत्रम। एतत् वृद्धिसंज्ञाविधायकं सूत्रम। आ, ऐ, औ इति वृद्धिनाम्ना ज्ञायते।

भावार्थ:-

आ, ऐ, औ की वृद्धि संज्ञा होती है; अर्थात् आ, ऐ, औ एकाकेश रूप हो या स्वतन्त्र हो प्रायः उन्हें 'वृद्धि' नाम से जाना जाता है।

वृद्धिरेचि- ६।१।८८।।

आदेचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्।

प्रस्तुतमिदं सूत्रमष्टाध्यायीत्यस्य षष्ठाध्यायस्य प्रथम पादान्तर्गतंमष्टाशीति क्रमादुद्धरितमस्ति। वृद्धिरिति प्रथमान्तं एचि इति सप्तम्यन्तं पदे द्विपदात्मक- मिदं सूत्रम।

अर्थात् एचि प्रत्याहारः स्यात् तर्हि पूर्वपरयोः स्थाने वृद्धिरेकादेशो भवति।

यथा- कृष्णैकत्वम। गङ्गौघः। देवैश्वर्यम। कृष्णौत्कण्ठ्यम।

कृष्णैकत्वम् -

कृष्ण + एकत्वम्। अत्र आद्गुणः उक्त सूत्रेण गुणः प्राप्नोति किन्तु तदपवादक "वृद्धिरेचीति सूत्रेणाकारैकारयोः स्थाने वृद्धिरूप ऐकारादेशे "कृष्णैकत्वम्" इति। एवं 'गङ्गौघः' इत्यादावपि ज्ञेयम्।

भावार्थ -

अवर्ण से एच् परे रहते पूर्व और पर के स्थान में 'वृद्धि' नामक एकादेश होता है। यह वृद्धि गुण का बाधक है।

अवधेशकुमारशर्मा
सहायक प्राचार्य, व्याकरण
अवध बिहारी संस्कृत महाविद्यालय,
रहीमपुर, खगड़िया।